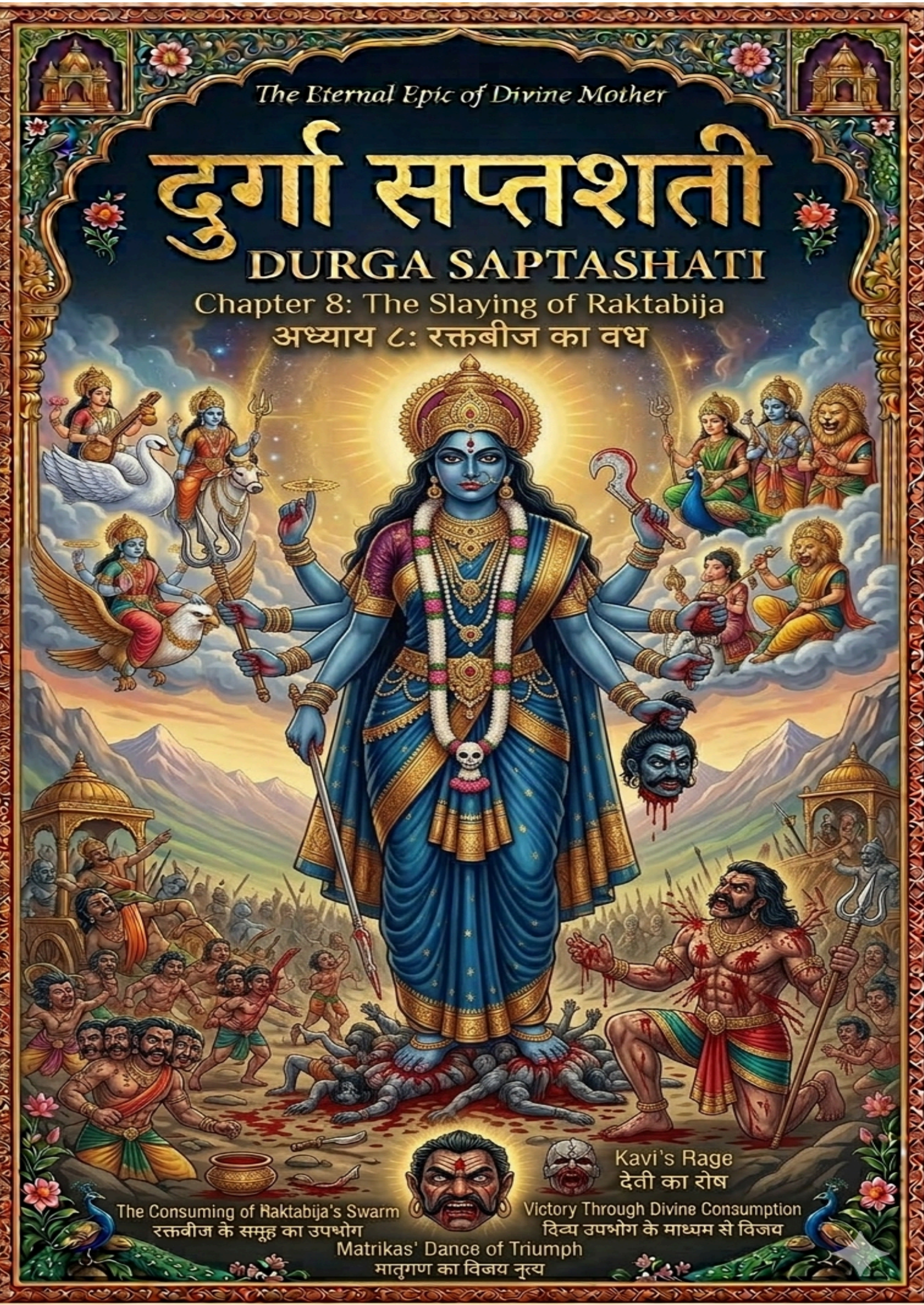

The Eternal Epic of Divine Mother
दुर्गा सप्तशती
DURGA SAPTASHATI
Chapter 8: The Slaying of Raktabija
अध्याय ८: रक्तबीज का वध
Kavi's Rage
देती का रोष
The Consuming of Raktabija's Swarm
रक्तबीज के समूह का उपभोग
Victory Through Divine Consumption
दिव्य उपभोग के माध्यम से विजय
Matrikas' Dance of Triumph
मातृगण का विजय नृत्य

Durga Saptashati

|| 'अष्टम अध्याय' ||

—

Numerology By Nehaa

Connect on WhatsApp for Consultation: 8802673153

यह अध्याय चण्ड और मुण्ड के वध के बाद दैत्यों के राजा शुम्भ के क्रोध और उसके द्वारा अपनी विशाल सेना को युद्ध के लिए भेजने की आज्ञा से शुरू होता है।

शुम्भ की सेना के आने पर, देवी चण्डिका ने अपने धनुष की टंकार, सिंह की दहाड़ और घण्टे की ध्वनि से भयंकर नाद उत्पन्न किया। इसके बाद, देवताओं - ब्रह्मा, शिव, कार्तिकेय, विष्णु और इंद्र - की शक्तियाँ, जिनका रूप, वेश-भूषा और वाहन उन देवताओं के समान ही थे, असुरों का संहार करने के लिए देवी चण्डिका के पास आईं।

महादेवजी ने चण्डिका से असुरों का शीघ्र संहार करने को कहा। तब देवी के शरीर से अत्यन्त भयानक 'शिवदूती' शक्ति प्रकट हुई, जिसने भगवान शिव को दूत बनाकर शुम्भ-निशुम्भ को पाताल लोक लौट जाने या युद्ध के लिए तैयार होने का संदेश भिजवाया।

संदेश सुनकर क्रोधित दैत्य युद्ध के लिए आए। मातृगणों (देवताओं की शक्तियों) ने भयंकर युद्ध किया। काली ने शूल और खट्वाङ्ग से, ब्रह्माणी ने कमण्डलु के जल से, माहेश्वरी ने त्रिशूल से, वैष्णवी ने चक्र से, कौमारी ने शक्ति से, ऐन्द्री ने वज्र से, वाराही ने थूथुन और दाढ़ों से तथा नारसिंही ने नखों से और शिवदूती ने अपने अट्टहास से अनेक असुरों का संहार किया।

मातृगणों से पीड़ित दैत्यों को भागते देख, रक्तबीज नामक महादैत्य युद्ध के लिए आया। उसे यह वरदान प्राप्त था कि उसके शरीर से रक्त की एक बूँद भी पृथ्वी पर गिरती तो उसी के समान शक्तिशाली एक नया दैत्य उत्पन्न हो जाता था। मातृशक्तियों ने जब उस पर प्रहार किए, तो उसके रक्त से हजारों-लाखों नए दैत्य उत्पन्न हो गए, जिससे देवता भयभीत हो गए।

देवताओं को उदास देखकर, चण्डिका ने काली से अपना मुख और भी फैलाकर, उसके शस्त्रों से गिरने वाले रक्त बिन्दुओं और उनसे उत्पन्न होने वाले सभी दैत्यों को खा जाने के लिए कहा। ऐसा करने से रक्तबीज का सारा रक्त क्षीण हो जाता और वह स्वयं नष्ट हो जाता।

काली ने चण्डिका के कहने पर, रक्तबीज के शरीर से निकलने वाले सारे रक्त को पी लिया और रक्त से उत्पन्न हुए सभी दैत्यों को भी चट कर गई। जब रक्तबीज का रक्त समाप्त हो गया, तो देवी चण्डिका ने वज्र, बाण, खड्ग और ऋष्टि आदि से उसे मार डाला। रक्तहीन हुआ महादैत्य रक्तबीज पृथ्वी पर गिर पड़ा। इससे देवताओं को अत्यंत हर्ष हुआ और मातृगण मद में आकर नृत्य करने लगे।

इस प्रकार, इस अध्याय में महादैत्य रक्तबीज का वध हुआ।

Durga Saptashati
|| 'अष्टम अध्याय' ||

Chapter 8 :

रक्तबीज-वध

॥ ध्यान ॥

मैं अणिमा आदि सिद्धिमयी किरणों से आवृत भवानी का ध्यान करता (करती) हूँ। उनके शरीर का रंग लाल है, नेत्रों में करुणा लहरा रही है तथा हाथों में पाश, अङ्कुश, बाण और धनुष शोभा पाते हैं।

ऋषि कहते हैं - चण्ड और मुण्ड नामक दैत्यों के मारे जाने तथा बहुत-सी सेना का संहार हो जाने पर दैत्यों के राजा प्रतापी शुम्भ के मन में बड़ा क्रोध हुआ और उसने दैत्यों की सम्पूर्ण सेना को युद्ध के लिये कूच करने की आज्ञा दी।

वह बोला - 'आज उदायुध नाम के छियासी दैत्य सेनापति अपनी सेनाओं के साथ युद्ध के लिए प्रस्थान करें। कम्बु नाम वाले दैत्यों के चौरासी सेनानायक अपनी वाहिनी से घिरे हुए यात्रा करें।

पचास कोटि वीर्य-कुल के और सौ धौम्र-कुल के असुर सेनापति मेरी आज्ञा से सेना सहित कूच करें।

कालक, दौर्हृद, मौर्य और कालकेय असुर भी युद्ध के लिये तैयार हो मेरी आज्ञा से तुरंत प्रस्थान करें।'

भयानक शासन करने वाला असुरराज शुम्भ इस प्रकार आज्ञा दे सहस्रों बड़ी-बड़ी सेनाओं के साथ युद्ध के लिये प्रस्थित हुआ।

उसकी अत्यन्त भयंकर सेना आती देख चण्डिका ने अपने धनुष की टंकार से पृथ्वी और आकाश के बीच का भाग गुँजा दिया।

राजन्! तदनन्तर देवी के सिंह ने भी बड़े जोर-जोर से दहाड़ना आरम्भ किया, फिर अम्बिका ने घण्टे के शब्द से उस ध्वनि को और भी बढ़ा दिया।

धनुष की टंकार, सिंह की दहाड़ और घण्टे की ध्वनि से सम्पूर्ण दिशाएँ गूँज उठीं। उस भयंकर शब्द से काली ने अपने विकराल मुख को और भी बढ़ा लिया तथा इस प्रकार वे विजयिनी हुईं।

उस तुमुल नाद को सुन कर दैत्यों की सेनाओं ने चारों ओर से आकर चण्डिका देवी, सिंह तथा काली देवी को क्रोध पूर्वक घेर लिया।

राजन्! इसी बीच में असुरों के विनाश तथा देवताओं के अभ्युदय के लिये ब्रह्मा, शिव, कार्तिकेय, विष्णु तथा इन्द्र आदि देवों की शक्तियाँ, जो अत्यन्त पराक्रम और बल से सम्पन्न थीं, उनके शरीरों से निकल कर उन्हीं के रूप में चण्डिका देवी के पास गयीं।

जिस देवता का जैसा रूप, जैसी वेश-भूषा और जैसा वाहन है, ठीक वैसे ही साधनों से सम्पन्न हो उसकी शक्ति असुरों से युद्ध करने के लिये आयी।

सब से पहले हंस युक्त विमान पर बैठी हुई अक्षसूत्र और कमण्डलु से सुशोभित ब्रह्माजी की शक्ति उपस्थित हुई, जिसे 'ब्रह्माणी' कहते हैं।

महादेवजी की शक्ति वृषभ पर आरूढ़ हो हाथों में श्रेष्ठ त्रिशूल धारण किये महानाग का कङ्कण पहने, मस्तक में चन्द्ररेखा से विभूषित हो वहाँ आ पहुँची।

कार्तिकेयजी की शक्तिरूपा जगदम्बिका उन्हीं का रूप धारण किये श्रेष्ठ मयूर पर आरूढ़ हो हाथ में शक्ति लिये दैत्यों से युद्ध करने के लिये आयीं।

इसी प्रकार भगवान् विष्णु की शक्ति गरुड़ पर विराजमान हो शङ्ख, चक्र, गदा, शार्ङ्गधनुष तथा खड्ग हाथ में लिये वहाँ आयी।

अनुपम यज्ञ वाराह का रूप धारण करने वाले श्रीहरि की जो शक्ति है, वह भी वाराह शरीर धारण करके वहाँ उपस्थित हुई।

नारसिंही शक्ति भी नृसिंह के समान शरीर धारण करके वहाँ आयी। उसकी गर्दन के बालों के झटके से आकाश के तारे बिखरे पड़ते थे।

इसी प्रकार इन्द्र की शक्ति वज्र हाथ में लिये गजराज ऐरावत पर बैठ कर आयी। उसके भी सहस्र नेत्र थे। इन्द्र का जैसा रूप है, वैसा ही उसका भी था।

तदनन्तर उन देव शक्तियों से घिरे हुए महादेवजी ने चण्डिका से कहा - 'मेरी प्रसन्नता के लिये तुम शीघ्र ही इन असुरों का संहार करो।'

तब देवी के शरीर से अत्यन्त भयानक और परम उग्र चण्डिका-शक्ति प्रकट हुई, जो सैकड़ों गीदड़ियों की भाँति आवाज करने वाली थी।

उस अपराजिता देवी ने धूमिल जटा वाले महादेवजी से कहा - 'भगवन्! आप शुम्भ-निशुम्भ के पास दूत बन कर जाइये।

और उन अत्यन्त गर्वीले दानव शुम्भ एवं निशुम्भ दोनों से कहिये। साथ ही उनके अतिरिक्त भी जो दानव युद्ध के लिए वहाँ उपस्थित हों उनको भी यह संदेश दीजिए। दैत्यो! यदि तुम जीवित रहना चाहते हो तो पाताल को लौट जाओ। इन्द्र को त्रिलोकी का राज्य मिल जाय और देवता यज्ञ भाग का उपभोग करें।

यदि बल के घमंड में आकर तुम युद्ध की अभिलाषा रखते हो तो आओ मेरी शिवाएं (योगिनियाँ) तुम्हारे कच्चे मांस से तृप्त हों।'

चूँकि उस देवी ने भगवान् शिव को दूत के कार्य में नियुक्त किया था, इसलिये वह 'शिवदूती' के नाम से संसार में विख्यात हुई।

वे महादैत्य भी भगवान् शिव के मुँह से देवी के वचन सुन कर क्रोध में भर गये और जहाँ कात्यायनी विराजमान थीं, उस ओर बढ़े।

तदनन्तर वे दैत्य अमर्ष में भर कर पहले ही देवी के ऊपर बाण, शक्ति और ऋष्टि आदि अस्त्रों की वृष्टि करने लगे।

तब देवी ने भी खेल-खेल में ही धनुष की टंकार की और उससे छोड़े हुए बड़े-बड़े बाणों द्वारा दैत्यों के चलाये हुए बाण, शूल, शक्ति और फरसों को काट डाला।

फिर काली उनके आगे हो कर शत्रुओं को शूल के प्रहार से विदीर्ण करने लगी और खट्वाङ्ग से उनका कचूमर निकालती हुई रणभूमि में विचरने लगी।

ब्रह्माणी भी जिस-जिस ओर दौड़ती, उसी-उसी ओर अपने कमण्डलु का जल छिड़क कर शत्रुओं के ओज और पराक्रम को नष्ट कर देती थी।

माहेश्वरी ने त्रिशूल से तथा वैष्णवी ने चक्र से और अत्यन्त क्रोध में भरी हुई कुमार कार्तिकेय की शक्ति ने शक्ति से दैत्यों का संहार आरम्भ किया।

इन्द्र शक्ति के वज्र प्रहार से विदीर्ण हो सैकड़ों दैत्य-दानव रक्त की धारा बहाते हुए पृथ्वी पर सो गये। वाराही शक्ति ने कितनों को अपनी थूथुन की मार से नष्ट किया, दाढ़ों के

अग्रभाग से कितनों की छाती छेद डाली तथा कितने ही दैत्य उसके चक्र की चोट से विदीर्ण हो कर गिर पड़े।

नारसिंही भी दूसरे-दूसरे महादैत्यों को अपने नखों से विदीर्ण करके खाती और सिंहनाद से दिशाओं एवं आकाश को गुंजाती हुई युद्ध क्षेत्र में विचरने लगी।

कितने ही असुर शिवदूती के प्रचण्ड अट्टहास से अत्यन्त भयभीत हो पृथ्वी पर गिर पड़े और गिरने पर उन्हें शिवदूती ने उस समय अपना ग्रास बना लिया।

इस प्रकार क्रोध में भरे हुए मातृगणों को नाना प्रकार के उपायों से बड़े-बड़े असुरों का मर्दन करते देख दैत्य सैनिक भाग खड़े हुए।

मातृगणों से पीड़ित दैत्यों को युद्ध से भागते देख रक्तबीज नामक महादैत्य क्रोध में भर कर युद्ध करने के लिये आया।

उसके शरीर से जब रक्त की बूँद पृथ्वी पर गिरती, तब उसी के समान शक्तिशाली एक दूसरा महादैत्य पृथ्वी पर पैदा हो जाता।

महासुर रक्तबीज हाथ में गदा ले कर इन्द्र शक्ति के साथ युद्ध करने लगा। तब ऐन्द्री ने अपने वज्र से रक्तबीज को मारा।

वज्र से घायल होने पर उसके शरीर से बहुत-सा रक्त चूने लगा और उससे उसी के समान रूप तथा पराक्रम वाले योद्धा उत्पन्न होने लगे।

उसके शरीर से रक्त की जितनी बूँदें गिरीं, उतने ही पुरुष उत्पन्न हो गये। वे सब रक्तबीज के समान ही वीर्यवान्, बलवान् तथा पराक्रमी थे।

वे रक्त से उत्पन्न होने वाले पुरुष भी अत्यन्त भयंकर अस्त्र-शस्त्रों का प्रहार करते हुए वहाँ मातृगणों के साथ घोर युद्ध करने लगे। पुनः वज्र के प्रहार से जब उसका मस्तक घायल हुआ, तब रक्त बहने लगा और उससे हजारों पुरुष उत्पन्न हो गए।

वैष्णवी ने युद्ध में रक्तबीज पर चक्र का प्रहार किया तथा ऐन्द्री ने उस दैत्य सेनापति को गदा से चोट पहुँचायी।

वैष्णवी के चक्र से घायल होने पर उसके शरीर से जो रक्त बहा और उससे जो उसी के बराबर आकार वाले सहस्रों महादैत्य प्रकट हुए, उनके द्वारा सम्पूर्ण जगत् व्याप्त हो गया।

कौमारी ने शक्ति से, वाराही ने खड्ग से और माहेश्वरी ने त्रिशूल से महादैत्य रक्तबीज को घायल किया। क्रोध में भरे हुए उस महादैत्य रक्तबीज ने भी गदा से सभी मातृ-शक्तियों पर पृथक्-पृथक् प्रहार किया। शक्ति और शूल आदि से अनेक बार घायल होने पर जो उसके शरीर से रक्त की धारा पृथ्वी पर गिरी, उससे भी निश्चय ही सैकड़ों असुर उत्पन्न हुए। इस प्रकार उस महादैत्य के रक्त से प्रकट हुए असुरों द्वारा सम्पूर्ण जगत् व्याप्त हो गया। इससे उन देवताओं को बड़ा भय हुआ। देवताओं को उदास देख चण्डिका ने काली से शीघ्रतापूर्वक कहा - 'चामुण्डे! तुम अपना मुख और भी फैलाओ।

तथा मेरे शस्त्र पात से गिरने वाले रक्त बिन्दुओं और उनसे उत्पन्न होने वाले महादैत्यों को तुम अपने इस उतावले मुख से खा जाओ।

इस प्रकार रक्त से उत्पन्न होने वाले महादैत्यों का भक्षण करती हुई तुम रण में विचरती रहो। ऐसा करने से उस दैत्य का सारा रक्त क्षीण हो जाने पर वह स्वयं भी नष्ट हो जाएगा। उन भयंकर दैत्यों को जब तुम खा जाओगी, तब दूसरे नये दैत्य उत्पन्न नहीं हो सकेंगे।' काली से यों कहकर चण्डिका देवी ने शूल से रक्तबीज को मारा।

और काली ने अपने मुख में उसका रक्त ले लिया। तब उसने वहाँ चण्डिका पर गदा से प्रहार किया।

किंतु उस गदा पात ने देवी को तनिक भी वेदना नहीं पहुँचायी। रक्तबीज के घायल शरीर से बहुत-सा रक्त गिरा।

किंतु ज्यों ही वह गिरा त्यों ही चामुण्डा ने उसे अपने मुख में ले लिया। रक्त गिरने से काली के मुख में जो महादैत्य उत्पन्न हुए, उन्हें भी वह चट कर गयी और उसने रक्तबीज का रक्त भी पी लिया। तदनन्तर देवी ने रक्तबीज को, जिसका रक्त चामुण्डा ने पी लिया था, वज्र, बाण, खड्ग तथा ऋष्टि आदि से मार डाला। राजन्! इस प्रकार शस्त्रों के समुदाय से आहत एवं रक्त हीन हुआ महादैत्य रक्तबीज पृथ्वी पर गिर पड़ा।

नरेश्वर! इससे देवताओं को अनुपम हर्ष की प्राप्ति हुई। और मातृगण उन असुरों के रक्तपान के मद में उद्वेग-सा होकर नृत्य करने लगा।

इस प्रकार श्रीमार्कण्डेय पुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के अन्तर्गत

देवी माहात्म्य में 'रक्तबीज-वध' नामक आठवाँ अध्याय पूरा हुआ |

॥Durga Saptashati

|| Chapter Eight ||

Chapter 8:

The Slaying of Raktabīja

॥ **Meditation (Dhyana)** ॥

I meditate upon Bhagawani (Goddess) who is surrounded by rays embodying the *Siddhis* like *Anima* (minuteness). Her body is red, her eyes are full of compassion, and her hands are adorned with a noose, an elephant-goad, arrows, and a bow.

The Sage said: When the demons named Chanda and Munda were slain, and a large part of the army was destroyed, great anger rose in the mind of the powerful king of the demons, Shumbha, and he commanded the entire demon army to march for battle.

He said, "Today, eighty-six demon generals named Udayudha, along with their armies, should set out for war. Eighty-four commanders of the demons named Kambu, surrounded by their forces, should proceed.

Fifty Koti (ten million) Vīrya-kula and one hundred Dhaumra-kula Asura generals, by my command, should march with their armies.

The Asuras Kalaka, Dauhrida, Maurya, and Kalakeya should also prepare for war and immediately set out by my command."

Thus commanding, the demon king Shumbha, who ruled terribly, set out for battle with thousands of vast armies.

Seeing his extremely terrifying army approach, Chandika made the space between the earth and the sky resonate with the twang of her

bow.

O King! Thereafter, the Goddess's lion also began to roar loudly, and then Ambika further amplified that sound with the chime of her bell.

The twang of the bow, the roar of the lion, and the sound of the bell made all directions echo. With that terrifying sound, Kali enlarged her dreadful mouth and thus they became victorious.

Hearing that tremendous noise, the demon armies approached from all sides and angrily surrounded Goddess Chandika, the lion, and Goddess Kali.

O King! In the meantime, for the destruction of the Asuras and the rise of the Gods, the Shaktis (powers) of Brahma, Shiva, Kartikeya, Vishnu, and Indra, which were endowed with extreme valor and strength, emerged from their bodies in their respective forms and went to Goddess Chandika.

The Shakti of each God, possessing the exact form, attire, and vehicle as the God, arrived equipped with the same means to fight the Asuras.

First came the Shakti of Brahma, known as 'Brahmani,' seated on a swan-yoked chariot, adorned with a rosary and a water-pot.

The Shakti of Mahadeva (Shiva) arrived, mounted on a bull, holding a supreme trident in her hands, wearing a bracelet of a great serpent, and embellished with the crescent moon on her forehead.

Jagadambika, in the form of Kartikeya's Shakti, arrived mounted on a supreme peacock, holding a spear (Shakti), to fight the demons.

Similarly, the Shakti of Lord Vishnu arrived, seated on Garuda, holding a conch, discus, mace, Sharanga bow, and sword in her hands.

The Shakti of Shri Hari, who takes the form of the incomparable Sacrificial Boar, also arrived, having assumed the body of a boar.

The Narasimhi Shakti also arrived, having assumed a body like Narasimha (Man-lion). The stars in the sky were scattered by the shaking of the hair on her neck.

Similarly, the Shakti of Indra arrived, holding a thunderbolt (Vajra) in her hand, seated upon the great elephant Airavata. She also had a thousand eyes. Her form was exactly like that of Indra.

Thereafter, Mahadeva, surrounded by those divine Shaktis, said to Chandika, "For my satisfaction, quickly destroy these Asuras."

Then, from the body of the Goddess, an extremely frightening and supremely fierce Shakti of Chandika appeared, making sounds like hundreds of jackals.

That unconquered Goddess said to Mahadeva, whose hair was smoky-colored, "Bhagavan (Lord)! You go as a messenger to Shumbha and Nishumbha.

And tell those two extremely arrogant Danavas, Shumbha and Nishumbha. Also give this message to any other Danavas present there for battle. O Daityas! If you wish to live, return to the netherworld (Patala). Let Indra have the kingdom of the three worlds, and let the Gods enjoy their share of the sacrifices.

If, due to the pride of strength, you desire battle, then come; let my Shivas (Yoginis) be satisfied with your raw flesh."

Since that Goddess appointed Lord Shiva to the task of a messenger, she became famous in the world by the name 'Shivdooti' (Messenger of Shiva).

Hearing the words of the Goddess from the mouth of Lord Shiva, those great demons were filled with rage and advanced towards where Katyayani was seated.

Thereafter, the demons, filled with indignation, first began to shower the Goddess with arrows, spears (Shakti), and javelins (Rishti).

Then the Goddess, as if in sport, twanged her bow and with the

great arrows she shot, cut down the arrows, lances, spears, and axes hurled by the demons.

Then Kali, moving forward, began to tear the enemies with the strike of her lance and, pulverizing them with her skull-staff (Khatvanga), roamed the battlefield.

Brahmani, wherever she ran, sprinkled the water from her water-pot, destroying the vitality and prowess of the enemies.

Maheshwari began to destroy the demons with her trident, Vaishnavi with her discus, and the Shakti of Kumara Kartikeya, filled with extreme anger, with her spear.

Hundreds of demon-danavas, torn by the strike of Indra's thunderbolt (Indra Shakti), lay on the earth, streaming with blood. Varahi Shakti destroyed many with the blow of her snout, pierced the chests of many with the tips of her tusks, and many demons fell, torn apart by the impact of her discus.

Narasimhi also tore and ate other great demons with her claws and roamed the battlefield, roaring like a lion and making the directions and the sky resonate.

Many Asuras, terrified by the fierce laughter of Shivdooti, fell to the earth, and as they fell, Shivdooti made them her prey.

Seeing the Matriganas (Mother Goddesses), filled with anger, thus crushing the great Asuras by various means, the demon soldiers took flight.

Seeing the demons, afflicted by the Matriganas, fleeing from the battle, the great demon named Raktabīja came forward to fight, filled with rage.

When a drop of blood fell to the earth from his body, another great demon of equal power was born on the earth.

The great Asura Raktabīja, holding a mace, began to fight with Indra Shakti. Then Aindri struck Raktabīja with her thunderbolt.

Wounded by the thunderbolt, a great deal of blood flowed from his body, and from it, warriors of the same form and prowess were born.

As many drops of blood as fell from his body, so many men were born. All of them were as vigorous, strong, and valiant as Raktabīja.

Those men born from the blood, also wielding extremely dreadful weapons, began a fierce battle with the Matriganas there. Again, when his head was wounded by the strike of the thunderbolt, blood began to flow, and from it, thousands of men were born.

Vaishnavi hurled her discus at Raktabīja in the battle, and Aindri struck that demon general with her mace.

Wounded by Vaishnavi's discus, the blood that flowed from his body and the thousands of great demons of the same size that appeared from it, filled the entire universe.

Kaumari wounded the great demon Raktabīja with her spear, Varahi with her sword, and Maheshwari with her trident. That great demon Raktabīja, filled with anger, also struck all the Mother Shaktis separately with his mace. Even after being wounded many times by the spear (Shakti), trident, etc., the stream of blood that fell to the earth from his body certainly produced hundreds of Asuras. In this way, the entire universe became filled with the Asuras who appeared from the blood of that great demon. This caused great fear to the Gods. Seeing the Gods distressed, Chandika quickly said to Kali, "Chamunde! Spread your mouth even wider.

And consume with this swift mouth of yours the drops of blood that fall from my weapons and the great demons born from them.

In this way, roam the battlefield, devouring the great demons born from the blood. By doing this, when all the demon's blood is depleted, he himself will also be destroyed. When you consume those terrifying demons, no new demons will be born." Saying this to Kali, Goddess Chandika struck Raktabīja with a trident.

And Kali took his blood into her mouth. Then he struck Chandika there with a mace.

But that mace blow did not cause the Goddess any pain. A lot of blood flowed from Raktabīja's wounded body.

But as soon as it fell, Chamunda took it into her mouth. She also swallowed the great demons born in Kali's mouth from the falling blood and drank Raktabīja's blood. Thereafter, the Goddess slew Raktabīja, whose blood Chamunda had drunk, with the thunderbolt, arrows, sword, javelin (Rishti), and so on. O King! Thus, the great demon Raktabīja, struck by a multitude of weapons and drained of blood, fell to the earth.

O Lord of Men! This brought incomparable joy to the Gods. And the Matriganas, in the intoxication of drinking the blood of those Asuras, began to dance with a sense of excitement.

Thus, in the Shrimarkandeya Purana, in the story of the Savarnika Manvantara, the eighth chapter named 'The Slaying of Raktabīja' in the Devi Mahatmya is completed.

Numerology By Nehaa

Connect on WhatsApp for Consultation: 8802673153

Our Services

- Name Correction
- Lo Shu Grid reading
- Missing Number Remedies
- Business Name Correction
- Baby Name Correction
- Kundali Matching
- Lucky Mobile Number
- Lucky House Number
- Lucky Vehicle Number
- Home Vastu
- Office Vastu

Free Numerology Tools

- Numerology Name Calculator
- Lo Shu Grid Calculator
- Lucky Mobile Number Calculator
- Lucky Vehicle Number Calculator
- Numerology Kundali Matching Tool